



स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार के पूर्णियां जिला की अर्थव्यवस्था की

गतिशीलता : एक केस स्टडी/का अध्ययन

Prabhat Kumar Singh, Research Scholar, Department of History, Purnea University, Purnia, Bihar (India)

Email: prabhatsingh.1470@gmail.com

सार

19वीं शताब्दी में, राजपूत और मुगल सम्राटों के बीच लड़ाई के कारण राजस्थान के व्यापारियों को भारत के अन्य क्षेत्रों में स्थानांतरित करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिसका उनके व्यवसाय पर महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इस संबंध में, उन्होंने ज्यादातर वाणिज्य के लिए बिहार के पूर्वोत्तर (एन-ई) क्षेत्रों की भी यात्रा की। वे अपने परिवारों, उनके पड़ोसियों और अन्य रिश्तेदारों को इस नए स्थान पर बसने के लिए ले गए, जब उन्होंने अपने व्यवसाय में खुद को स्थापित कर लिया था। उनका प्राथमिक लक्ष्य इन प्रसिद्ध व्यक्तियों को लाकर व्यापार में आगे बढ़ना था, जिन पर वे पूरी तरह से भरोसा कर सकते थे। वे धीरे-धीरे समुदाय के साथ घुलमिल गए और सामाजिक आयोजनों, व्यापार और अंततः स्थानीय राजनीति में प्रभावी योगदान देना शुरू कर दिया। इस अध्ययन का विषय पूर्णिया में व्यापारी समुदाय की भूमिका, भारत की स्वतंत्रता के बाद बिहार की राजनीतिक प्रक्रिया है। हमारे शोध के अनुसार, पूर्णिया व्यापारियों ने या तो स्वतंत्रता सेनानियों को वित्तीय या नैतिक सहायता प्रदान करके निष्क्रिय भूमिका निभाई थी या भारत की स्वतंत्रता पूर्व अवधि के दौरान पूरी तरह से अलग रहकर निष्क्रिय भूमिका निभाई थी। हालाँकि, स्वतंत्रता के बाद, वे धीरे-धीरे सक्रिय हो गए और वर्तमान में अपने प्राथमिक वाणिज्यिक हितों के अलावा स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मुख्य शब्द: इतिहास; समाज; शिक्षा, व्यापारी

परिचय:

यह शोध भारत के शहरीकरण और पिछले कुछ दशकों में देश के आर्थिक सुधारों द्वारा लाए गए परिवर्तनों की पड़ताल करता है 1991-20 में आर्थिक उदारीकरण और परिवर्तनों की शुरुआत ने संक्रमण की इस अवधि की शुरुआत को चिह्नित किया। हालाँकि, भारत के शहरीकरण के कई पहलू अतीत के साथ निरंतरता दिखाते हैं, जैसा कि उम्मीद की जानी चाहिए, क्योंकि एक समाज के जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक लक्षण अचानक और भारी रूप से नहीं बदलते हैं। भारतीय सभ्यता के उत्तर-औपनिवेशिक शहरीकरण और आधुनिकीकरण के कई पहलू सांस्कृतिक वृद्धि के माध्यम से विकसित हुए हैं, जैसे कि सभ्यता ने सहस्राब्दियों में किया है। पिछले 20 वर्षों में आर्थिक और सामाजिक प्रक्रियाओं में तेजी आई है, जिसने निर्मित पर्यावरण, शहरी जीवन के पहलुओं और समग्र रूप से शहरी प्रणाली में परिवर्तन की गति को तेज किया है, भले ही उत्तर औपनिवेशिक भारत अभी भी धीरे-धीरे विकसित हो रहा है और लंबे समय से कई स्रोतों से प्रभावित रहा है।

भारत के शहरी आर्थिक ढांचे की जांच करने के लिए राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस) से डेटा। शहरी पदानुक्रम के आधार पर छोटे शहर और कस्बे भारत के शहरी विकास का एक और क्षेत्र हैं जो तेजी से हो रहा है। सबसे हाल की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, इस पदानुक्रम का सबसे निचला छोर पहले की तुलना में अधिक जीवंत है। गाँव शहरों में बदल रहे हैं, एक प्रवृत्ति जो पिछली शताब्दी के दूसरे भाग में उतनी मजबूत नहीं थी। छोटे शहर और गाँव मुख्य रूप से प्राकृतिक विस्तार के कारण विकसित हुए हैं, लेकिन उनकी आर्थिक भूमिकाएँ भी विकसित हो रही हैं। अधिक से अधिक, छोटे शहर पुरानी (उदारीकरण



से पहले) और नई (उदारीकरण के बाद) दोनों अर्थव्यवस्थाओं के उत्पादों और सेवाओं के लिए जीवंत बाजारों के रूप में कार्य कर रहे हैं। बिहार राज्य के एक छोटे से शहर पूर्णिया पर ध्यान केंद्रित करके शहरी प्रणाली के निचले क्षेत्रों में परिवर्तन की गतिशीलता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए। लगभग 5,260,000 की आबादी के साथ, पूर्णिया नगर निगम बिहार में स्थित है, जो न केवल भारत का सबसे गरीब राज्य है, बल्कि देश में शहरीकरण की सबसे कम दरों में से एक है, जो 11.3% है। आर्थिक उदारीकरण के पहले 18 वर्षों के दौरान, राज्य को स्थानीय और विदेशी दोनों स्रोतों से बहुत कम निवेश प्राप्त हुआ और इसे पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया। लेकिन पिछले दस वर्षों में, इसके शहरी परिदृश्य में इसके राज्य के घरेलू उत्पाद के साथ-साथ वृद्धि हुई है। इस प्रकार, पूर्णिया का शहरी विकास और परिवर्तन देश के तुलनीय अविकसित क्षेत्रों में शहरी प्रक्रियाओं के एक उदाहरण के रूप में काम कर सकता है। निम्नलिखित पूछताछ मामले के अध्ययन का आधार बनती है: महानगरीय संरचना के ऊपरी स्तरों से ट्रिक्ल-डाउन विकास के विपरीत "स्वायत्त" विकास का विचार सबसे महत्वपूर्ण है। डेनिस एट अल के अनुसार सबाल्टर्न शहरीकरण। (2012) ऐतिहासिक और बाजार ताकतों द्वारा लाई गई शहरी बस्तियों का "स्वायत्त विकास" है जो बड़े महानगरों या "नियोजित" शहरों पर "निर्भर" नहीं हैं। इसके बजाय, इसमें "एक आवश्यक विशेषता के रूप में शहर से स्वायत्तता और स्वतंत्रता की एक डिग्री" है। निर्माण

इस बात की मान्यता बढ़ रही है कि शहरी भारत पर अधिकांश अध्ययन देश के सबसे बड़े शहरों पर केंद्रित हैं, जिसमें छोटे, स्वतंत्र रूप से बढ़ते कस्बों और शहरों पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। छोटे पैमाने पर एकत्रीकरण द्वारा विकास के बारे में दूसरा विषय-यानी, आर्थिक गतिविधियों के छोटे समूह जो स्थानीय लाभ और सामाजिक-सांस्कृतिक नेटवर्क द्वारा बनाए जाते हैं-डेनिस एट अल द्वारा लाया गया है (2012)। 2023 के सितंबर और अक्टूबर में पूर्णिया में किया गया अधिकांश क्षेत्र कार्य इन दो विषयों पर आधारित था क्योंकि वे दोनों अधिक शोध के योग्य थे। निष्कर्ष सामान्य शहरीकरण पैटर्न का सारांश देता है और भविष्य के शहरीकरण के लिए शहरी प्रणाली में निरंतरता और परिवर्तनों के प्रभावों की जांच करता है।

II. भारत में हाल के शहरी विकास की विशेषताएं लगभग 75 वर्षों से, भारत के शहरीकरण की प्राथमिक विशेषताएं नहीं बदली हैं (शॉ, 2005) पहली महत्वपूर्ण विशेषता पूर्ण रूप से इसकी शहरी आबादी का परिमाण है। 2011 में लगभग 377 मिलियन लोग भारत के शहरों में रहते थे, जो देश की कुल आबादी का 31.2% था और चीन के बाद दुनिया में दूसरे स्थान पर था। भारत के शहरीकरण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू इसकी शहरी आबादी की संख्या है। इसका आधार इतना विशाल है कि, पिछली शताब्दी में शहरीकरण के अपेक्षाकृत कम स्तरों के बावजूद, मामूली वृद्धि भी भारी शुद्ध वृद्धि की ओर ले जाती है। इसलिए, शहरी आबादी में शुद्ध वृद्धि जारी है, इस तथ्य के बावजूद कि 1970 और 1980 के दशक की तुलना में शहरी विस्तार की दर कुछ धीमी हो गई है। उदाहरण के लिए, पिछले दस वर्षों में भारत की शहरी आबादी में 90 मिलियन लोगों की वृद्धि हुई है। इस प्रकार के बड़े पैमाने पर दशकीय विस्तार ने बुनियादी ढांचे की योजना बनाना और आवश्यक सेवाएं प्रदान करना मुश्किल बना दिया है। भारत के शहरीकरण का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अन्य प्रमुख उभरते देशों की तुलना में, इसकी विकास गति हाल ही में काफी तेज रही है। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में भारत का धीरे-धीरे शहरीकरण हुआ, जिसमें दशक से दशक तक मामूली जनसंख्या वृद्धि हुई। 1941 के बाद से, विकास में तेजी आई है, जो 1971 और 1981 के बीच सालाना 3.8% पर पहुंच गया है, 1951 और 2011 के बीच सालाना औसतन लगभग 3% तक कम हो गया है, एक दर



जिसे यूएन-हैबिटेट "तेजी से विकास" के रूप में संदर्भित करता है। भारत की शहरी आबादी में 2001 और 2011 के बीच सालाना 2.76% की वृद्धि हुई, जो देश की ग्रामीण आबादी से काफी अधिक है, जो 2020 की जनगणना के अनुसार, इसी अवधि के दौरान सालाना 2.15% बढ़ गई।

वास्तव में, पिछले दस वर्षों में पहली बार, भारत की शहरी आबादी अपनी ग्रामीण आबादी की तुलना में तेजी से बढ़ी है। यह एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय बदलाव की ओर ध्यान आकर्षित करता है और इसका तात्पर्य है कि बढ़ता शहरीकरण और शहरी जीवन शायद भारत के भविष्य को परिभाषित करेगा। भारत की शहरी संरचना की आकार वर्ग विशेषताएँ तीसरी विशेषता हैं। शोधकर्ताओं ने दशकों पहले भारत के शहरी विकास को "शीर्ष-भारी" के रूप में वर्णित किया था, लेकिन उन्होंने हमेशा प्रथम श्रेणी के शहरों (100,000 से अधिक आबादी वाले) के रूप में वर्गीकृत बस्तियों की संख्या और अनुपात दोनों में वृद्धि के संदर्भ में ऐसा किया था 2011 में, उदाहरण के लिए, शहरों में रहने वाले 377 मिलियन लोगों में से 70 प्रतिशत (264.9 मिलियन) 100,000 या उससे अधिक के कस्बों और शहरी समूहों में रहते थे। दूसरी ओर, 1901 में, सभी शहरी निवासियों में से केवल 27 प्रतिशत 100,000 या उससे अधिक की आबादी वाले शहरों में रहते थे। शहरी प्रणाली के शीर्ष स्तर पर वर्तमान में विशाल, फैले हुए महानगरों का वर्चस्व है, और बड़ी शहरी बस्तियों के लिए 100,000 की जनसंख्या की आवश्यकता अब लोगों के आकार वर्ग और वितरण को सटीक रूप से प्रतिबिंबित नहीं करती है। जनसंख्या के आकार के आधार पर शहरी बस्तियों का संयुक्त राष्ट्र का वर्गीकरण एक अधिक उपयोगी दृष्टिकोण है। मेगासिटी 10 मिलियन या उससे अधिक की आबादी वाले शहर हैं; बहुत बड़े शहरों की आबादी 5 से 10 मिलियन है; बड़े शहरों की आबादी 1 से 5 मिलियन है; मध्यवर्ती शहरों की आबादी 500,000 से 1 मिलियन है; छोटे शहरों की आबादी 300,000 से 500,000 है; और छोटे शहरों की आबादी 300,000 से कम है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों का एक अतिरिक्त लाभ यह है कि यह दुनिया भर में शहरी प्रणालियों के साथ-साथ एक तुलनीय आबादी वाले देश (उदाहरण के लिए चीन) के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह एक तुलनात्मक विश्लेषण को सक्षम बनाता है जो यह दिखा सकता है कि भारत का आकार वर्ग वितरण विश्व वितरण और दूसरे बड़े और आबादी वाले राष्ट्र दोनों के लिए कितना करीब है। इसके अलावा, एक अनुदैर्घ्य तुलना संभव है क्योंकि विचाराधीन डेटा 1950 से लेकर 2035 के अनुमानित आंकड़ों तक सात दशकों तक फैला हुआ है। हाल के आंकड़े कई दिलचस्प प्रवृत्तियों को दर्शाते हैं (यूएन, 2019) मेगासिटी या एक करोड़ या उससे अधिक की आबादी वाले शहर चीन या बाकी दुनिया की तुलना में भारत की कुल शहरी आबादी का एक बड़ा हिस्सा हैं। इस आकार समूह ने 2015 में सभी शहरी निवासियों का 16% बनाया, जबकि दुनिया भर में और चीन में 12% की तुलना में। 2035 तक भारत की कुल शहरी आबादी में मेगासिटीज के 24% होने की उम्मीद है, जबकि वैश्विक और चीनी औसत लगभग 16% है। भारत की महानगरीय संरचना स्पष्ट रूप से "शीर्ष-भारी" है। हालाँकि, इस पैटर्न में एक दिलचस्प अपवाद है। भारत की शहरी आबादी का एक कम प्रतिशत चीन या बाकी दुनिया की तुलना में बहुत बड़े शहरों (5 से 10 मिलियन के बीच) और मध्यवर्ती शहरों (500,000 से 1 मिलियन के बीच) में रहता है। हालाँकि एक से पांच मिलियन की आबादी वाले बड़े शहरों में रहने वाले लोगों का प्रतिशत वैश्विक औसत के लगभग बराबर है, 2035 तक, ये तीन शहर प्रकार भारत की कुल शहरी आबादी का केवल 34% हिस्सा बनेंगे, जबकि वैश्विक स्तर पर 41% और चीन में 51%। हालाँकि, आर्थिक उदारीकरण से पहले, भारत की शहरी आबादी का एक बड़ा प्रतिशत वैश्विक औसत की तुलना में 500,000 से कम निवासियों वाली बस्तियों में रहता था।



यह 2015 में सभी शहरी निवासियों का 49% था और धीरे-धीरे वैश्विक औसत तक कम हो गया है। यह तथ्य कि भारत की लगभग आधी शहरी आबादी अभी भी छोटी शहरी बस्तियों में रहती है, यह दर्शाता है कि ये बस्तियाँ देश की शहरी संरचना के लिए कितनी महत्वपूर्ण हैं।

शहरी प्रणाली के सबसे निचले छोर पर शहरों का पुनर्जीवित उदय वास्तव में भारत की शहरीकरण प्रक्रिया में सबसे दिलचस्प नई घटनाओं में से एक है, जैसा कि 2011 की जनगणना में दिखाया गया है। 2001 से 2015 तक जनगणना शहरों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि इसका प्रमाण है।

जनगणना 2011 के आंकड़ों से पता चलता है कि 2001 और 2011 के बीच, 202.3,532 जनगणना शहरों को शहरी प्रणाली में जोड़ा गया था, जिससे भारत के शहरी केंद्रों की कुल संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। हालांकि 1981 और 1991 के बीच शहरी केंद्रों की कुल संख्या में 16% और 1991 और 2010 के बीच 15% की वृद्धि हुई, यह आंकड़ा पिछले दस वर्षों में 54% बढ़ा, यह दर्शाता है कि शहरीकरण पूरे देश में फैल रहा है। हालांकि, कुछ विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि यह निर्धारित करना असंभव होगा कि इन 3,532 जनगणना कस्बों में से कौन से पेरी-शहरी बस्तियां थीं जो पड़ोसी शहरी क्षेत्रों में विलय हो गईं और जो वास्तव में नए शहर हैं जो पहले से मौजूद ग्रामीण गांवों से विकसित हुए हैं जब तक कि उनके सटीक स्थानों पर अधिक सटीक डेटा उपलब्ध नहीं है (कुंडू, 2011) शहरीकरण के लिए एक निचले स्तर का दृष्टिकोण बाद के प्रकार के जनगणना शहर द्वारा दिखाया जाएगा। प्रधान (2013) द्वारा एक प्रारंभिक अध्ययन भारत सरकार की राष्ट्रीय ई-शासन योजना से निपटान वर्गीकरण डेटा का उपयोग करके 2001 और 2020 के बीच बढ़ते शहरीकरण में नए जनगणना शहरों के स्थानों और योगदान का अनुमान लगाता है। नए निर्मित जनगणना शहरों में से अधिकांश कभी गाँव थे, और उनके भौगोलिक वितरण से पता चला कि हालांकि प्रमुख शहरों के पास कई जिलों में एकाग्रता थी, जनगणना शहरों की स्थापना भी पूरे देश में व्यापक रूप से फैली हुई थी। इस प्रकार, ग्रामीण गांवों का शहरी केंद्रों में रूपांतरण स्पष्ट है, अधिक शहरीकरण होने के अलावा, ये राज्य गरीब राज्यों की तुलना में अधिक तेजी से शहरीकरण कर रहे हैं। गरीब राज्य विपरीत प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं; पिछले दस वर्षों में यह अलग-अलग शहरी विकास पैटर्न दिखाया गया है। भारत में, शहरीकरण और आर्थिक विकास ऐतिहासिक रूप से दृढ़ता से सहसंबद्ध रहे हैं (सैक्स एट अल, 2002) लेकिन कुछ राज्यों में, संघ कम स्पष्ट है। हिमांशु (2018) के अनुसार इसके प्रभावों में से एक 1993-1994 के दौरान असमानता में वृद्धि रही है, जिसमें शहरी असमानता "भारत में बढ़ती असमानता का मुख्य चालक" है। साथ ही, सबसे बड़े शहरों और छोटे शहरी क्षेत्रों के बीच असमानता अभी भी मौजूद है, जिसमें मेट्रो क्षेत्र (जिनकी आबादी दस लाख या उससे अधिक है) 2 में काफी उच्च नगरपालिका सेवा मानक और गरीबी की दर कम है (महादेविया और सरकार, 2012)

भारत में शहरी क्षेत्रों की आर्थिक संरचना

भारत के शहरों की आर्थिक संरचना एक महत्वपूर्ण कारक है; विशेष रूप से, उदारीकरण के बाद कुछ स्थानों पर यह कैसे बदल गया है और कैसे यह दूसरों में समान रहा है। एक बड़े अनौपचारिक क्षेत्र का अस्तित्व, जिसमें 2017-19 में सभी श्रमिकों का 69% हिस्सा था, पूर्व के सबसे उल्लेखनीय उदाहरणों में से एक है (एनएसओ, 2019)³। हालांकि यह प्रतिशत 2004-05 (एनएसएस 61 वें दौर) में 72% से कम हो गया है, यह अभी भी शहरी कार्यबल के दो-तिहाई से अधिक का प्रतिनिधित्व करता है। इसके अलावा, एनएसएस 66वें दौर, जिसमें जून 2009 से जुलाई 2010 तक अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार और स्थितियों की जांच की



गई, में पाया गया कि अनौपचारिक क्षेत्र अभी भी महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से विनिर्माण, थोक और खुदरा व्यापार और निर्माण (एनएसएसओ, 2012) में। तालिका 1 में शहरी अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों का लिंग (2004-05 और 2009-10) के आधार पर प्रतिशत दिखाया गया है।

Industry	Urban area 2009-10%	Male2009-10	Female2009-10
Manufacturing	78	79	87
Constructions	72		66
Trade	92	97	93
Transport	88		44
Hotel	73	95	90

Source: NSSO 2012 (Employment in India 2009-10)

यह दर्शाता है कि भारत के शहरों में, आधिकारिक क्षेत्र के बजाय अनौपचारिक श्रमिकों का इन उद्योगों के साथ-साथ परिवहन पर भी प्रभुत्व बना हुआ है। 2004-05 और 2009-10 के बीच, रोजगार के लिंग विश्लेषण के अनुसार, विनिर्माण, व्यापार और होटल और रेस्तरां में अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाले पुरुषों और महिलाओं का प्रतिशत कम हो गया; फिर भी, अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार का समग्र प्रतिशत अत्यधिक उच्च बना हुआ है। हालांकि, अन्य उद्योगों में अनौपचारिक क्षेत्र में श्रमिकों का प्रतिशत काफी कम है, जैसा कि एनएसएस 61वें दौर में उल्लेख किया गया है। इनमें खनन, विद्युत, वित्तीय मध्यस्थता, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र शामिल हैं, जो मुख्य रूप से औपचारिक हैं। 2009 और 2012 के बीच, इन उद्योगों के आधे से भी कम कर्मचारी असंगठित क्षेत्र में कार्यरत थे। उदारीकरण के बाद इनमें से कुछ उद्योग फले-फूले हैं। विनिर्माण का निरंतर महत्व भारत की शहरी आर्थिक संरचना की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है। इस तथ्य को कभी-कभी नजरअंदाज कर दिया जाता है क्योंकि पिछले 20 वर्षों में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण का योगदान थोड़ा ही बढ़ा है, और देश की अर्थव्यवस्था तेजी से सेवा-उन्मुख हो गई है। पहला, सामान्य स्थिति वाले लोगों का रोजगार 1993 और 2018 के बीच 12.6% से गिरकर 7.14% हो गया, क्योंकि भारत के शहरों में कृषि और संबंधित गतिविधियों में उत्तरोत्तर कमी आई है। माध्यमिक क्षेत्र में रोजगार 1993-1994 में 33% से बढ़कर 2017-2018 में 35% हो गया, जिससे इस नुकसान की भरपाई हुई। दूसरा, पिछले कुछ वर्षों में विनिर्माण क्षेत्र में श्रमिकों का अनुपात लगभग 24 प्रतिशत रहा है। इस प्रवृत्ति को शहरी क्षेत्रों में विनिर्माण के बढ़ते अनौपचारिककरण से समझाया जा सकता है, जबकि विनिर्माण गतिविधि में लगे शहरी श्रमिकों का स्थिर प्रतिशत भारत के मुख्य शहरों में विनिर्माण नौकरियों के पारंपरिक रूपों की स्पष्ट और चल रही गिरावट (शशि, 2012) के विपरीत है। जबकि संगठित क्षेत्र से विनिर्माण उत्पादन में कमी आई है क्योंकि व्यवसाय कम कीमतों और बेहतर भौतिक सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए ग्रामीण और पेरि-शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित हो गए हैं, नव निर्मित विनिर्माण नौकरियों का बहुमत अनौपचारिक क्षेत्र में रहा है (गनी एट अल। वास्तव में, महानगरीय क्षेत्रों में संगठित विनिर्माण रोजगार 1989 और 2005 के बीच 66% से गिरकर 59% हो गया। दूसरा, हालांकि वे बड़े शहरों की तुलना में समग्र रूप से विनिर्माण क्षेत्र का कम हिस्सा बनाते हैं, विनिर्माण कई छोटे शहरों और गांवों में होता है। डेनिस एट अल के अनुसार, "मेट्रो का अभी भी आधे से भी कम हिस्सा है, और आधुनिक सेवा सहित सभी क्षेत्रों में शहरी रोजगार का एक तिहाई से भी कम हिस्सा समाप्त हो जाता है।" (2012) जिन्होंने शहर के आकार के आधार पर विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में रोजगार हिस्सेदारी का विश्लेषण किया। उन्होंने यह भी पाया कि गैर-महानगरीय शहरी क्षेत्र प्रमुख विनिर्माण गतिविधियों का एक बड़ा हिस्सा बनाए रखते हैं (55) उदाहरण के



लिए, भारत के शहरी क्षेत्रों ने 2009-10 में मशीनरी उत्पादन का 72% हिस्सा लिया, जिसमें 41% विनिर्माण मेट्रो क्षेत्रों में और शेष हिस्सा गैर-मेट्रो शहरी क्षेत्रों में हुआ।

पूर्णिया, बिहार, छोटे शहर की गतिशीलता

पूर्णिया, बिहार, छोटे शहर की गतिशीलता के एक केस स्टडी के रूप में यह खंड बिहार राज्य के एक छोटे से शहर पूर्णिया का एक केस स्टडी प्रदान करता है, जो पिछले 20 वर्षों के दौरान शहरी प्रणाली के निचले स्तर पर हो रहे परिवर्तन की गतिशीलता को समझने में मदद करता है। 2018 में भारत के सबसे कम शहरीकरण (15.3%) में से एक के साथ, बिहार देश का सबसे गरीब राज्य है। नतीजतन, यह अभी भी कृषि पर बहुत अधिक निर्भर है, और इसके कई प्रमुख शहर कृषि व्यापार के लिए केंद्र के रूप में काम करते हैं। राज्य की ऐतिहासिक उत्पत्ति गंगा और कोसी नदियों के जलोढ़ ऊद मैदानों पर इसके स्थान से परिलक्षित होती है; वास्तव में, शहरी बस्तियाँ यहाँ 500 ईसा पूर्व (शाँ, 2012) से हैं। बिहार की नदियों की लगातार बाढ़ ने भी गरीबी और दुख में योगदान दिया है। हालाँकि, बिहार की ग्रामीण आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा गहराई से निहित, जाति-संचालित भूमि-स्वामित्व असमानताओं के कारण गरीबी रेखा से नीचे बना हुआ है, जिसका पर्यावरणीय कारकों की तुलना में अधिक प्रभाव पड़ता है। वे कृषि मजदूरों और सीमांत किसानों के रूप में बहुत कम पैसा कमाते हैं, और एक या एक से अधिक परिवार के सदस्यों के लिए जीवित रहने का एकमात्र तरीका राज्य से बाहर पलायन करना है। साथ ही, यह राज्य अपनी अत्यंत कम साक्षरता दर और स्थिर कृषि उत्पादकता के लिए जाना जाता है।⁶ समय के साथ, ये स्थितियाँ बदतर हो गई हैं। देश के बाकी हिस्सों की तुलना में, 1960 के दशक की शुरुआत में बिहार का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद काफी अधिक था और 1970 के दशक में भी ऐसा ही रहा। हालाँकि, राज्य 1980 के दशक (चंदा, 2011) में "देश के बाकी हिस्सों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए पर्याप्त तेजी से विकास करने में विफल रहा" जब 2000 में राज्य का विभाजन किया गया था, तो दक्षिणी आधा-जो उद्योग और खनिजों से समृद्ध था-अलग होकर झारखंड राज्य बन गया, जिससे एक और आर्थिक झटका लगा। बिहार की प्रति व्यक्ति आय 1999 और 2001 के बीच राष्ट्रीय औसत का केवल एक तिहाई थी (नागराज और रहमान, 2010) राज्य प्रशासन के अनुसार 2009-10 में यह बढ़कर 34.7 प्रतिशत हो गया है, जो राज्य की आर्थिक स्थिति में सुधार का सुझाव देता है (बिहार प्रशासन, 2012, पृष्ठ 5)। इस उथल-पुथल के पीछे का कारण अभी भी विवाद का विषय है। जब 2005 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) से संबद्ध पार्टी जनता दल (यूनाइटेड) (जद (यू) के नीतीश कुमार को बिहार का मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया था, तो कुछ लोगों का तर्क है कि यह राजनीति और नीतियों में बदलाव का परिणाम था। छठा, इस घटना को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) पार्टी और उसके करिश्माई नेता लालू प्रसाद यादव के तहत दस साल के भ्रष्टाचार, अराजकता और आर्थिक ठहराव की परिणति के रूप में देखा गया।⁷ कुमार ने सरकारी अधिकारियों से अधिक जवाबदेही का आह्वान करके भ्रष्टाचार को संबोधित किया, अपराध से निपटने के लिए एक सक्रिय पुलिस बल पर जोर दिया और बिहार के राजमार्गों और शिक्षा प्रणाली को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया। इनमें से कुछ पहलों, जैसे दसवीं कक्षा पूरी करने वाली महिला छात्रों को साइकिल देने के परिणामस्वरूप माध्यमिक विद्यालय की महिला छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय और व्यापक रूप से वृद्धि हुई। इसी तरह, सड़कों (राज्य और राष्ट्रीय राजमार्ग दोनों) के निर्माण के लिए एक बड़े पैमाने पर सार्वजनिक कार्य कार्यक्रम की स्थापना की आवश्यकता थी, जिसने रोजगार पैदा करने के अलावा निर्माण उद्योग के उत्पादन में काफी



वृद्धि की है (नागराज और रहमान, 2010) हालांकि, राजनीतिक शासन संक्रमण और आर्थिक विकास के बीच इस प्रत्यक्ष संबंध पर कई विश्लेषकों द्वारा सवाल उठाया गया है। राज्य के अपराध के आंकड़ों की व्यापक जांच से पता चलता है कि मध्यम वर्ग को प्रभावित करने वाले अपराधों में गिरावट आई है, फिरौती के लिए इस तरह के अपहरण, लेकिन कुल अपराध में महत्वपूर्ण गिरावट नहीं आई है। इसके अलावा, कुछ विश्लेषकों का मानना है कि बिहार का हालिया विस्तार उस पैटर्न की निरंतरता को दर्शाता है जो 1994-1995 में शुरू हुआ था, लेकिन 2000 में राज्य के विभाजन से रुक गया था (दास गुप्ता, 2010)

इस दावे पर भी सवाल उठाया गया है कि बिहार का भवन निर्माण उद्योग विशेष रूप से 2006-07 से 2010-18 तक इसके तेज आर्थिक विकास का प्राथमिक चालक रहा है। वास्तव में, बिहार का बेहतर विकास मुख्य रूप से बेहतर कानून और व्यवस्था या निर्माण प्रयासों के बजाय बढ़ते व्यापार के कारण हुआ है। दास गुप्ता (दास गुप्ता, 2010, पृष्ठ 60) के अनुसार, यह "पिछले दशक में बिहार की अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण चालक" रहा है। कारण जो भी हो, बिहार की प्रगति निर्विवाद है; सभी राज्यों में, वित्तीय वर्ष 2010-2011 और 2011-2012 में इसकी सबसे तेज जीडीपी वृद्धि हुई (श्रीवास्तव, 2012) 8. 2017-19 में, इसकी सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीडीएसपी) की 13.3% की वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत > 7% से काफी अधिक थी, जो दर्शाता है कि इसकी अर्थव्यवस्था अभी भी "निरंतर विकास पथ" पर है (जीओबी, 2019, पी. 1) हालांकि, इन प्रगति को अतिरंजित नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि राज्य को गरीबी और अविकसितता के अपने लंबे इतिहास को देखते हुए देश के बाकी हिस्सों तक पहुंचने के लिए अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। उदाहरण के लिए, बिहार में एक बड़ी आबादी है जो राष्ट्रीय औसत की तुलना में तेजी से बढ़ रही है। वास्तव में, विभाजित राज्य देश की आबादी का 8.5% का घर है, हालांकि इसके पूरे भूमि क्षेत्र का केवल 3% हिस्सा है (भारत की जनगणना, 2011) इसमें देश का सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व (1,102 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) है जो राष्ट्रीय औसत (482 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) (बिहार सरकार, 2015) से काफी अधिक है। इन तत्वों को देखते हुए, मामले के अध्ययन में छोटे शहर की वृद्धि और विकास का विश्लेषण इसके राज्य के इतिहास, भौगोलिक विरासत और विकास उद्देश्यों और शासन में हाल के बदलावों के आलोक में किया जाना चाहिए। 1. पूर्णिया नगर निगम: आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक 1770 में स्थापित, पूर्णिया जिला देश के सबसे पुराने जिलों में से एक है, और इसका प्रशासनिक केंद्र पूर्णिया नगर निगम है। यह जिला बिहार के पूर्वी क्षेत्र में स्थित है, जिसकी सीमा पश्चिम बंगाल से लगती है। 2001 और 2011 के बीच जिले की शहरी आबादी में 53.15% की वृद्धि हुई, जो बिहार में सबसे तेज दरों में से एक थी और राज्य के औसत से काफी अधिक थी। यह ज्यादातर पूर्णिया शहर की विस्फोटक वृद्धि के कारण हुआ था, जिसने पिछले दस वर्षों के दौरान इसकी आबादी में 63.41% की वृद्धि देखी, जो 2001 में 171,687 से 2011 में 282,248 हो गई (रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त, 2011 बी) इसकी विकास दर राष्ट्रीय शहरी विकास दर (31.80%) और इसी अवधि में राज्य की समग्र शहरी विकास दर (35.11%) दोनों से काफी अधिक है। इसके त्वरित विस्तार के कारण, 2011 में पूर्णिया शहर को नगरपालिका से नगर निगम में अपग्रेड किया गया और चार अतिरिक्त वार्ड जोड़े गए। तीन प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्गों (एनएच-31, एनएच-57 और एनएच-107) के चौराहे पर पूर्णिया ईस्ट ब्लॉक में स्थित यह वर्तमान में बिहार का सबसे बड़ा शहरी समुदाय है (चित्र 1) पूर्णिया जिले में दो राज्य राजमार्ग एसएच-60 और एसएच-62 भी हैं। यह समझ में आता है कि पूर्णिया शहर अपनी लाभप्रद स्थिति को देखते हुए जिले का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र है।



शहर की वर्तमान उत्पत्ति का पता 1871 में लगाया जा सकता है, जब दो बंगाली भाइयों, प्रेंकस्टो और बिप्रोदास साहा ने ग्रेड ट्रंक रोड (अब एनएच-31) पर एक डिपार्टमेंट स्टोर खोला था। साहा भाई कोलकाता स्थित रेलवे ठेकेदार थे जो अक्सर मालदा और किशनगंज के पड़ोसी समुदायों की यात्रा करते थे। ब्रिटिश नील उत्पादकों ने उन्हें पूर्णिया में आमंत्रित किया क्योंकि उन्हें मक्खन, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ, विस्की, गोला-बारूद आदि जैसे उत्पादों के लिए एक विश्वसनीय स्रोत की आवश्यकता थी।

उस समय भूमि सस्ती थी, और यह क्षेत्र अभी भी ज्यादातर जंगल से ढका हुआ था। ब्रिटिश नील बागान मालिकों से प्रोत्साहित होकर, भाइयों ने लगभग 26 बीघा जमीन पर पूर्णिया का पहला डिपार्टमेंट स्टोर खोला, जो उन्हें प्रसिद्ध स्थानीय जमींदार राय बहादुर भुबन मोहन सान्याल द्वारा दिया गया था। चूंकि शहर का पहला मूवी थिएटर, सार्वजनिक बस स्टॉप, और नागरिक और न्यायिक प्रशासन (केचरी या अदालत) सभी पास में थे, इसलिए यह स्थल धीरे-धीरे एक महत्वपूर्ण नगरपालिका स्थल बन गया। यह प्रतिच्छेदन, वर्तमान में "R.N. के रूप में जाना जाता है। शॉ चौक को शहर का वाणिज्यिक और प्रशासनिक केंद्र माना जाता है। यह पड़ोस अभी भी मोटर वाहन उद्योग के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से पुर्जों, मरम्मत और सेवाओं के लिए, भले ही 1971 में डिपार्टमेंट स्टोर बंद हो गया हो। फायरस्टोन जैसे प्रमुख ट्रैक्टर निर्माताओं ने R.N. में डीलर शोरूम स्थापित करना शुरू कर दिया। 1970 के दशक की शुरुआत में कृषि के विकास और हरित क्रांति के परिणामस्वरूप शॉ चौक क्षेत्र। वास्तव में, पूर्णिया में पहला कृषि विकास बैंक आधिकारिक तौर पर दिसंबर 1972 में विश्व बैंक के अध्यक्ष रॉबर्ट मैकनामारा द्वारा खोला गया था, जिन्होंने बैंक ऋण से खरीदे गए पहले ट्रैक्टर की चाबी भी दी थी। लेकिन पिछले 20 वर्षों में, नए ट्रक और वाहन व्यवसायों, जिन्हें अधिक जगह की आवश्यकता है, ने काफी दूर गुलाब बाग (12 किमी) और मारंगा (7-8 किमी) सहित शोरूम का निर्माण किया है। जब 20 वीं शताब्दी के मध्य में इस क्षेत्र में अन्य दुकानें खुलने लगीं, जैसे M/S J.N. 1935 में भट्टाचार्य एंड संस और 1955 में M/S नारायण भंडार, एक दूसरा आर्थिक केंद्र R.N. के थोड़ा और पूर्व में उभरा। शॉ चौक (बनर्जी, 2011) "भट्टा बाजार" के रूप में जाना जाने वाला यह पूरा क्षेत्र वर्तमान में शहर का प्राथमिक बाजार है। यहाँ शहर के सबसे बड़े होटल, कई सख्त सामान, कपड़े और सामान्य सामान की दुकानें हैं, और अपने ताजे फलों, सब्जियों, मांस और समुद्री भोजन विक्रेताओं के साथ ऐतिहासिक बाजार है। इस क्षेत्र के बड़े खुदरा विक्रेता अब राष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडेड सामान जैसे स्टाइलिश कपड़े, कंप्यूटर और स्कूटर ले जाते हैं। चीनी और उत्तर भारतीय व्यंजनों में विशेषज्ञता रखने वाले रेस्तरां के अलावा, क्षेत्र में स्टोर नॉर सूप, बर्तौली जैतून का तेल, भारतीय निर्मित नूडल्स और अमूल चीज़ क्यूब्स सहित पैकेज्ड और संसाधित सामान बेचते हैं। NH-31 राजमार्ग पर, R.N. के 12 किमी उत्तर पूर्व में। पूरब बाग (एक रेलहेड के बगल में) में शॉ चौक, पूर्णिया का तीसरा आर्थिक केंद्र स्थापित किया गया था। गुलाब बाग समय के साथ महत्वपूर्ण अनाज भंडारण सुविधाओं के साथ एक संपन्न अनाज बाजार के रूप में विकसित हुआ है। यह आलू, जूट और सब्जियों के व्यापार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और यह बिहार की राजधानी पटना की तुलना में इन क्षेत्रों में असमान रूप से अधिक मात्रा में वाणिज्य करता है। यह अपने वार्षिक शीतकालीन कृषि मेले के लिए जाना जाता था। कारीगरों, ग्रामीण उत्पादों के बाजार में गिरावट के कारण, मेला अभी भी सालाना आयोजित किया जाता है, हालांकि काफी छोटे पैमाने पर। R.N. के उत्तर-पूर्व में पांच से छह किलोमीटर। एनएच-31 पर शॉ चौक एक ऐसा क्षेत्र है जिसे लाइन बाजार के नाम से जाना जाता है, जहाँ चिकित्सा सेवाओं में विशेषज्ञता रखने वाला



चौथा वाणिज्यिक केंद्र उभरा है। वर्तमान में, लाइन बाजार रोड पर 450 से 500 डॉक्टरों के साथ-साथ बड़ी संख्या में मेडिकल दुकानें, एक्स-रे और पैथोलॉजी क्लीनिक और नर्सिंग होम हैं। भट्टा बाजार को छोड़कर पूर्णिया के सभी आर्थिक केंद्र एनएच-31 के साथ स्थित हैं, जो जिले के मुख्य मार्गों में से एक है, क्योंकि यह एक अपेक्षाकृत हालिया केंद्र है जो 1970 के दशक के मध्य का है। चारों केन्द्रों का लगभग पूरा विकास निजी प्रयासों से हुआ है। निजी क्षेत्र ने हाल के वर्षों में बैंकवेट हॉल, रेस्तरां, पब, शोरूम, एटीएम और निजी बैंकों में निवेश किया है। इसके अलावा, कृषि शीत भंडारण में हाल के निवेश के कारण शहर की कुल भंडारण क्षमता में 1 लाख (100,000 मीट्रिक टन) की वृद्धि हुई है।, जिला मजिस्ट्रेट कुमार, 2012)

15 प्राथमिक विद्यालय, 24 माध्यमिक विद्यालय, 6 माध्यमिक विद्यालय, 3 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, एक सरकारी महाविद्यालय (पूर्णिया महाविद्यालय), एक सरकारी इंजीनियरिंग महाविद्यालय (पॉलिटेक्निक महाविद्यालय) और दो निजी तकनीकी संस्थान (रामबाग में मिलिया प्रौद्योगिकी संस्थान और मारंगा में विद्या विहार प्रौद्योगिकी संस्थान) के साथ शिक्षा पूर्णिया का एक और क्षेत्र है जहां निजी निवेश बढ़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर विज्ञान, कंप्यूटर अनुप्रयोग और प्रबंधन अध्ययन में डिग्री के अलावा, मिलिया संस्थान सिविल, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिग्री प्रदान करता है। वर्तमान में केवल बी की पेशकश कर रहा है। टेक। डिग्री, विद्या विहार प्रौद्योगिकी संस्थान पटना में आर्यभट्ट विश्वविद्यालय से संबद्ध है और व्यवसाय प्रबंधन की डिग्री प्रदान करने की महत्वाकांक्षा रखता है। शहर में प्रतियोगी और शैक्षिक परीक्षाओं के लिए बड़ी संख्या में कोचिंग संस्थान भी हैं। रियल एस्टेट पूर्णिया में निजी क्षेत्र का एक और विस्तार उद्योग है। बड़े घरों की मांग उद्यमियों के एक नए वर्ग द्वारा संचालित की जा रही है, जैसा कि मध्य वर्ग में जगन्नाथ दास के बड़े दीवार वाले, गेटेड निवास से पता चलता है, मुख्य रूप से भट्टा के बंगाली आवासीय पड़ोस में। शहर में अधिकांश घर और व्यवसाय छोटे, स्थानीय रूप से डिजाइन किए गए और निर्मित हैं। पूरे शहर में विभिन्न स्थानों पर बड़े होटल भी बनाए जा रहे हैं। गुलाब बाग में जीरो माइल में 122 एकड़ की एक निजी बस्ती भी शुरू की गई है; इसके निर्माता, ग्रीन वैली इंफ्रासिटी प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा में स्थित हैं और "प्रौद्योगिकी और भव्यता के मिश्रण के साथ एक विश्व स्तरीय जीवन शैली, पर्यावरण के अनुकूल वातावरण" के साथ-साथ "शांति और शांति" प्रदान करने का वादा करते हैं (ग्रीन वैली, 2011) यह राज्य में अपनी तरह का पहला मामला है। प्लॉट्स और अपार्टमेंट अब आरक्षण के लिए उपलब्ध हैं; इसे जनवरी 2012 में लॉन्च किया गया था (www.greenvalleyinfra.com) शहर के विस्तार के पीछे प्राथमिक शक्ति होने के बावजूद, निजी क्षेत्र के संचालन हमेशा एक व्यवस्थित तरीके से विकसित नहीं हुए हैं (यह विशेष रूप से लाइन बाजार में चिकित्सा केंद्र के बारे में सच है) शहर के चार प्राथमिक आर्थिक केंद्र भौगोलिक रूप से फैले हुए हैं, जो दर्शाता है कि पूर्णिया का विकास अब तक विकेंद्रीकृत रहा है। शेष भारत में कई छोटे शहरी केंद्रों की तरह, पूर्णिया की शहरी संरचना एक एकल, अच्छी तरह से परिभाषित निर्मित कोर नहीं है, बल्कि अविकसित और कृषि क्षेत्रों के साथ बिखरे हुए निर्मित पैच के कई केंद्र हैं। इसके अलावा, घर अक्सर मामूली यार्ड के साथ केवल एक से दो मंजिला ऊंचे होते हैं, विशेष रूप से मध्यम वर्ग के आवासीय पड़ोस जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में। राज्य और राष्ट्रीय राजमार्गों में महत्वपूर्ण सुधार जो शहर को पार करते हैं और मारंगा (R.N के 7 किमी दक्षिण में) में एक बड़े औद्योगिक पार्क के लिए भूमि का अधिग्रहण करते हैं। शॉ चौक) शहर के विकास में सरकार का प्राथमिक आर्थिक योगदान रहा है। बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास एजेंसी (बी.



आई. ए. डी. ए.) द्वारा बनाए गए इस उद्यान में कपड़ा, जूट, हमारी मिलों और मशरूम के उत्पादन सहित विभिन्न उपयोगों के लिए जगह शामिल है। ये कुछ हद तक बड़ी इकाइयाँ हैं, लेकिन कई छोटी औद्योगिक इकाइयाँ भी हैं जो केले के चिप्स, जूट के थैले, हस्तशिल्प, मोमबतियाँ, पापड़ (आलू/दाल के वेफर्स) मसाला (मसाले) और अगरबत्ती (अगरबत्ती) का उत्पादन करती हैं (बिहार सरकार, 2011) कृषि उत्पाद, जैसे कि जूट, कृषि उपकरण, बांस और उसके उप-उत्पादों, फलों और सब्जियों, और मुर्गी और उसके उप-उत्पादों का व्यापार, इस ज्यादातर कृषि क्षेत्र में व्यापार को संचालित करता है (बिहार सरकार, 2011, पृष्ठ 1) 2007-2008 में जिले के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 40% था (बिहार सरकार, 2010) उस समय भूमि सस्ती थी, और यह क्षेत्र अभी भी ज्यादातर जंगल से ढका हुआ था। ब्रिटिश नील बागान मालिकों से प्रोत्साहित होकर, भाइयों ने लगभग 26 बीघा जमीन पर पूर्णिया का पहला डिपार्टमेंट स्टोर खोला, जो उन्हें प्रसिद्ध स्थानीय जमींदार राय बहादुर भुबन मोहन सान्याल द्वारा दिया गया था। नाइन साहस ने दुकान को "M/S R.N." नाम दिया। शॉ एंड कंपनी "अपने पिता के बाद, और यह एक सदी तक संचालित रहा, विशेष रूप से संपत्ति पर एक पेट्रोल स्टेशन के निर्माण के बाद, जिसने बिक्री को और भी बढ़ावा दिया। चूंकि शहर का पहला मूवी थिएटर, सार्वजनिक बस स्टॉप, और नागरिक और न्यायिक प्रशासन (केचरी या अदालत) सभी पास में थे, इसलिए यह स्थल जल्द ही एक महत्वपूर्ण नगरपालिका स्थल बन गया। यह प्रतिच्छेदन, वर्तमान में "R.N. के रूप में जाना जाता है। शॉ चौक को शहर का वाणिज्यिक और प्रशासनिक केंद्र माना जाता है। यह पड़ोस अभी भी मोटर वाहन उद्योग के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से पुर्जों, मरम्मत और सेवाओं के लिए, भले ही 1971 में डिपार्टमेंट स्टोर बंद हो गया हो। फायरस्टोन जैसे प्रमुख ट्रेक्टर निर्माताओं ने R.N में डीलर शोरूम स्थापित करना शुरू कर दिया। 1970 के दशक की शुरुआत में कृषि के विकास और हरित क्रांति के परिणामस्वरूप शॉ चौक क्षेत्र। वास्तव में, पूर्णिया में पहला कृषि विकास बैंक आधिकारिक तौर पर दिसंबर 1972 में विश्व बैंक के अध्यक्ष रॉबर्ट मैकनामारा द्वारा खोला गया था, जिन्होंने बैंक ऋण से खरीदे गए पहले ट्रेक्टर की चाबी भी दी थी। लेकिन पिछले 20 वर्षों में, नए ट्रक और वाहन व्यवसायों, जिन्हें अधिक जगह की आवश्यकता है, ने काफी दूर गुलाब बाग (12 किमी) और मारंगा (7-8 किमी) सहित शोरूम का निर्माण किया है। जब 20 वीं शताब्दी के मध्य में इस क्षेत्र में अन्य दुकानें खुलने लगीं, जैसे M/S J.N. 1935 में भट्टाचार्य एंड संस और 1955 में M/S नारायण भंडार, एक दूसरा आर्थिक केंद्र R.N के थोड़ा और पूर्व में उभरा। शॉ चौक (बनर्जी, 2011) "भट्टा बाजार" के रूप में जाना जाने वाला यह पूरा क्षेत्र वर्तमान में शहर का प्राथमिक बाज़ार है। यहाँ शहर के सबसे बड़े होटल, कई सख्त सामान, कपड़े और सामान्य सामान की दुकानें हैं, और अपने ताजे फलों, सब्जियों, मांस और समुद्री भोजन विक्रेताओं के साथ ऐतिहासिक बाजार है। इस क्षेत्र के बड़े खुदरा विक्रेता अब राष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडेड सामान जैसे स्टाइलिश कपड़े, कंप्यूटर और स्कूटर ले जाते हैं। चीनी और उत्तर भारतीय व्यंजनों में विशेषज्ञता रखने वाले रेस्तरां के अलावा, क्षेत्र में स्टोर नॉर सूप, बर्तौली जैतून का तेल, भारतीय निर्मित नूडल्स और अमूल चीज़ क्यूब्स सहित पैकेज्ड और संसाधित सामान बेचते हैं। NH-31 राजमार्ग पर, R.N के 12 किमी उत्तर पूर्व में। पूरब बाग (एक रेलहेड के बगल में) में शॉ चौक, पूर्णिया का तीसरा व्यापार केंद्र स्थापित किया गया था। गुलाब बाग समय के साथ महत्वपूर्ण अनाज भंडारण सुविधाओं के साथ एक संपन्न अनाज बाजार के रूप में विकसित हुआ है। यह आलू, जूट और सब्जियों के व्यापार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और यह बिहार की राजधानी पटना की तुलना में इन क्षेत्रों में



असमान रूप से अधिक मात्रा में वाणिज्य करता है। यह अपने वार्षिक शीतकालीन कृषि मेले के लिए जाना जाता था। कारीगरों, ग्रामीण उत्पादों के बाजार में गिरावट के कारण, मेला अभी भी सालाना आयोजित किया जाता है, हालांकि काफी छोटे पैमाने पर। R.N के उत्तर-पूर्व में पांच से छह किलोमीटर। एनएच-31 पर शॉ चौक एक ऐसा क्षेत्र है जिसे लाइन बाजार के नाम से जाना जाता है, जहाँ चिकित्सा सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला चौथा वाणिज्यिक केंद्र उभरा है। वर्तमान में, लाइन बाजार रोड पर 450 से 500 डॉक्टरों के साथ-साथ बड़ी संख्या में मेडिकल दुकानें, एक्स-रे और पैथोलॉजी क्लीनिक और नर्सिंग होम हैं। अर्धराष्ट्र बाजार को छोड़कर पूर्णिया के सभी आर्थिक केंद्र एनएच-31 के साथ स्थित हैं, जो जिले के मुख्य मार्गों में से एक है, क्योंकि यह एक अपेक्षाकृत हालिया केंद्र है जो 1970 के दशक के मध्य का है। चारों केन्द्रों का लगभग पूरा विकास निजी प्रयासों से हुआ है। निजी क्षेत्र ने हाल के वर्षों में बैंकवेट हॉल, रेस्तरां, पब, शोरूम, एटीएम और निजी बैंकों में निवेश किया है। इसके अलावा, कृषि शीत भंडारण में हाल के निवेश के कारण शहर की कुल भंडारण क्षमता में 1 लाख (100,000 मीट्रिक टन) की वृद्धि हुई है।, जिला मजिस्ट्रेट कुमार, 2012)

15 प्राथमिक विद्यालय, 24 माध्यमिक विद्यालय, 6 माध्यमिक विद्यालय, 3 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, एक सरकारी महाविद्यालय (पूर्णिया महाविद्यालय), एक सरकारी इंजीनियरिंग महाविद्यालय (पॉलिटेक्निक महाविद्यालय) और दो निजी तकनीकी संस्थान (रामबाग में मिलिया प्रौद्योगिकी संस्थान और मारंगा में विद्या विहार प्रौद्योगिकी संस्थान) के साथ शिक्षा पूर्णिया का एक और क्षेत्र है जहां निजी निवेश बढ़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर विज्ञान, कंप्यूटर अनुप्रयोग और प्रबंधन अध्ययन में डिग्री के अलावा, मिलिया संस्थान सिविल, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिग्री प्रदान करता है। वर्तमान में केवल बी की पेशकश कर रहा है। टेक। डिग्री, विद्या विहार प्रौद्योगिकी संस्थान पटना में आर्यभट्ट विश्वविद्यालय से संबद्ध है और व्यवसाय प्रबंधन की डिग्री प्रदान करने की महत्वाकांक्षा रखता है। इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी और स्कूली परीक्षाओं के लिए बड़ी संख्या में कोचिंग केंद्र भी हैं। रियल एस्टेट पूर्णिया में निजी क्षेत्र का एक और विस्तार उद्योग है। बड़े घरों की मांग उद्यमियों के एक नए वर्ग द्वारा संचालित की जा रही है, जैसा कि मध्य वर्ग, मुख्य रूप से भट्टा के बंगाली आवासीय पड़ोस में जगन्नाथ दास के बड़े दीवार वाले, गेटेड निवास से पता चलता है। शहर में अधिकांश घर और व्यवसाय छोटे, स्थानीय रूप से डिजाइन किए गए और निर्मित हैं। पूरे शहर में विभिन्न स्थानों पर बड़े होटल भी बनाए जा रहे हैं। गुलाब बाग में जीरो माइल में 122 एकड़ की एक निजी बस्ती भी शुरू की गई है; इसके निर्माता, ग्रीन वैली इंफ्रासिटी प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा में स्थित हैं और "प्रौद्योगिकी और भव्यता के मिश्रण के साथ एक विश्व स्तरीय जीवन शैली, पर्यावरण के अनुकूल वातावरण" के साथ-साथ "शांति और शांति" प्रदान करने का वादा करते हैं (ग्रीन वैली, 2011) यह राज्य में अपनी तरह का पहला मामला है। प्लॉट्स और अपार्टमेंट अब आरक्षण के लिए उपलब्ध हैं; इसे जनवरी 2012 में लॉन्च किया गया था (www.greenvalleyinfra.com) शहर के विस्तार के पीछे प्राथमिक शक्ति होने के बावजूद, निजी क्षेत्र के संचालन हमेशा एक व्यवस्थित तरीके से विकसित नहीं हुए हैं (यह विशेष रूप से लाइन बाजार में चिकित्सा केंद्र के लिए सच है) शहर के चार प्राथमिक आर्थिक केंद्र भौगोलिक रूप से फैले हुए हैं, जो दर्शाता है कि पूर्णिया का विकास अब तक विकेंद्रीकृत रहा है। शेष भारत में कई छोटे शहरी केंद्रों की तरह, पूर्णिया की शहरी संरचना एक एकल, अच्छी तरह से परिभाषित निर्मित कोर नहीं है, बल्कि अविकसित और कृषि



क्षेत्रों के साथ बिखरे हुए निर्मित पैच के कई केंद्र हैं। इसके अलावा, घर अक्सर एक छोटे से बगीचे के साथ केवल एक से दो मंजिला ऊंचे होते हैं, यहां तक कि मध्यम वर्ग के आवासीय पड़ोस जैसे घनी आबादी वाले स्थानों में भी। राज्य और राष्ट्रीय राजमार्गों में महत्वपूर्ण सुधार जो शहर को पार करते हैं और मारंगा (R.N के 7 किमी दक्षिण में) में एक बड़े औद्योगिक पार्क के लिए भूमि का अधिग्रहण करते हैं। शॉ चौक) शहर के विकास में सरकार का प्राथमिक आर्थिक योगदान रहा है। बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास एजेंसी (बी. आई. ए. डी. ए.) द्वारा बनाए गए इस उद्यान में कपड़ा, जूट, हमारी मिलों और मशरूम के उत्पादन सहित विभिन्न उपयोगों के लिए जगह शामिल है। ये कुछ हद तक बड़ी इकाइयाँ हैं, लेकिन कई छोटी औद्योगिक इकाइयाँ भी हैं जो केले के चिप्स, जूट के तैले, हस्तशिल्प, मोमबत्तियाँ, पापड़ (आलू/दाल के वेफर्स) मसाला (मसाले) और अगरबत्ती (अगरबत्ती) का उत्पादन करती हैं (बिहार सरकार, 2011) कृषि उत्पाद, जैसे कि जूट, कृषि उपकरण, बांस और उसके उप-उत्पादों, फलों और सब्जियों, और मुर्गी और उसके उप-उत्पादों का व्यापार, इस ज्यादातर कृषि क्षेत्र में व्यापार को संचालित करता है (बिहार सरकार, 2011, पृष्ठ 1) 2007-2008 में जिले के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 40% था (बिहार सरकार, 2010) शहर के बिगड़ते ठोस कचरे और सीवरेज के मुद्दों पर पूछताछ के जवाब में, श्री रेज़ा ने भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला जैसे कि शहर के 100 नगरपालिका सफाईकर्मियों को सड़क की सफाई और चिकित्सा केंद्र से चिकित्सा कचरे को अलग से जलाने में मदद करने के लिए गैर-सरकारी संगठनों का उपयोग। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कई अलग-अलग दृष्टिकोण हैं और निगम की निर्वाचित परिषद में निर्णय लेना मुश्किल है। उन्होंने यह भी बताया कि परिषद के कुछ सदस्य मुद्दों के बारे में जानकारी नहीं हैं, जो प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर देता है। जल निकासी के लिए एक मास्टर प्लान विकसित किया गया है और निष्पादन की प्रतीक्षा कर रहा है। अगस्त 2019 तक, योजना (pers.comm) को लागू करने का प्रयास किया जा रहा है। संजय बनर्जी) अंतर्राष्ट्रीय विकास विभाग, यूके (डीएफआईडी) से बिहार सरकार द्वारा शहरी विकास को लागू करने में स्थानीय अधिकारियों की अल्प-वित्त पोषण और अनुभवहीनता के कारण छह साल की साझेदारी पहल (2010-2016) के माध्यम से सहायता प्रदान करने के लिए संपर्क किया गया था। नगरपालिका कॉर्पोरेट भवन में एक कार्यालय के साथ, पूर्णिया उन स्थानों में से एक था जहाँ 2012 में डी. आई. एफ. डी. का संचालन किया गया था। डी. आई. एफ. डी. की मदद से शहर के विकास और प्रशासन के लिए भविष्य की योजना का मसौदा तैयार किया गया है। ^{ae}इंटरकांटीनेंटल कंसल्टेंट्स एंड टेक्नोक्रेट्स प्राइवेट लिमिटेड ने सिटी डेवलपमेंट प्लान (2010-2030) बनाया जो शहर के वर्तमान सेवा वितरण स्तरों, भविष्य की योजनाओं और उनके वित्तीय परिणामों (बिहार सरकार, 2011) का व्यापक मूल्यांकन प्रदान करता है। जल आपूर्ति, जल निकासी और सीवरेज, गरीबों के लिए आवास, परिवहन, स्ट्रीट लाइटिंग और सामाजिक बुनियादी ढांचे सहित आवश्यक सेवाओं को उन्नत करने के लिए लगभग 860 करोड़ (8600 मिलियन) रुपये की आवश्यकता होगी। डी. एफ. आई. डी. के श्री अख्तर के अनुसार, सरकार ने नगर योजना और उसके सभी सुझावों को मंजूरी दे दी थी। नगर निगम ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए 70% धनराशि प्रदान करेगा, शेष हिस्सा डीएफआईडी से आएगा। शहर के किनारे के पास 53 एकड़ भूमि का भूखंड चुना गया है। रणनीति में डोर-टू-डोर संग्रह और स्रोत-स्तर पर कचरे का पृथक्करण शामिल है। जून 2014 तक प्रत्येक प्रमुख पड़ोस में अब यांत्रिक कचरा वितरण उपकरण के साथ कचरा संग्रह के लिए धातु के धूल के डिब्बे हैं। हालांकि, डोर-टू-डोर संग्रह अभी तक स्थापित नहीं किया



गया है, और संग्रह दक्षता कम है। बिहार सरकार के शहरी आवास और विकास विभाग ने भी जून 2014 में एक शहर स्वच्छता योजना को अंतिम रूप दिया, जिसमें अनुमान लगाया गया था कि शहर की पूर्ण स्वच्छता सुविधाओं की लागत रु। 1083.53 करोड़ (बिहार सरकार, 2014) इसे लागू किया जाना अभी शुरू ही हुआ है। दिसंबर 2010 में किए गए एक आधिकारिक अध्ययन में पाया गया कि 129 झुग्गी बस्तियों में 63,735 लोग रहते थे, या शहर की कुल आबादी का लगभग 22.72% (बिहार सरकार, 2011) आवास और आवश्यक बुनियादी ढांचे में सुधार के उद्देश्य से एक परीक्षण परियोजना में भाग लेने के लिए डी. एफ. आई. डी. द्वारा वार्ड 34, 15 और 4 में तीन झुग्गियों को चुना गया था। निविदा प्रक्रिया 2014 तक पूरी हो गई थी, और वार्ड 34 के उन्नयन के लिए हस्ताक्षरित अनुबंध किए जाने थे। जिला शहरी विकास प्राधिकरण (डी. यू. डी. ए.), एक राज्य सरकार की एजेंसी, को उन्नत झुग्गियों का उपयोग शहर की अन्य झुग्गियों के लिए टेम्पलेट के रूप में करना था। लेकिन 2016 में सरकार के साथ डीएफआईडी के समझौते की अवधि समाप्त होने के बाद से कुछ नहीं किया गया है। कॉम. संजय बनर्जी, अगस्त, 2019) एक अधिक सकारात्मक नोट पर, पूर्णिया एक शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय भी देख रहा है, जो अपने साथ नागरिक जागरूकता की शुरुआत और वंचितों की स्थिति को बेहतर बनाने की इच्छा लाता है। इस आंदोलन का नेतृत्व शहर की विवेकानंद सोसायटी, एक संबद्ध संगठन है जो धर्मार्थ परियोजनाओं के लिए स्थानीय लोगों को सदस्यों के रूप में भर्ती करता है, और राम कृष्ण मिशन, एक धार्मिक संगठन है जिसने मध्यम वर्ग की महिलाओं को कामकाजी गरीबों के बच्चों के लिए एक प्राथमिक विद्यालय के संचालन में शामिल किया है। हालाँकि, इन गतिविधियों का दायरा सीमित है, और सामान्य रूप से नागरिक जुड़ाव अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। वी. सारांश मैंने इस निबंध में छोटे शहरों की गतिशीलता पर विशेष ध्यान देते हुए पिछले 20 वर्षों में भारत के शहरीकरण की सामान्य विशेषताओं को समझाने की कोशिश की है। एक हालिया और महत्वपूर्ण विकास 2001-2011 दशक में शहरी पदानुक्रम के निचले स्तर पर शहरों का पुनरुत्थान है। 2011-12 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, 2,532 नए शहर जोड़े गए, जो पिछले दस वर्षों में 185% की वृद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अलावा, पिछले 20 वर्षों में आधुनिक सेवाओं का विस्तार हुआ है; यह उल्लेखनीय है कि यह विस्तार छोटे शहरों और गांवों में भी हुआ है। शहरी प्रणाली के निचले छोर पर परिवर्तनों का महत्व भारत के शहरीकरण की व्यापक विशेषताओं से प्रकट होता है। भारत के प्रमुख महानगरीय क्षेत्रों के बाहर, छोटे शहरों और कस्बों में देश की शहरी आबादी का एक बड़ा हिस्सा रहता है, आसपास के क्षेत्रों के विकास में सहायता करता है, और यदि सही समर्थन और दिशा दी जाए तो विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखता है।

अध्ययन के अंतिम भाग में बिहार राज्य के छोटे शहर पूर्णिया का उदाहरण देते हुए स्वायत्त विकास बनाम विकास के मुद्दे की जांच की गई है जो बड़े शहरों पर निर्भर है। पूर्णिया के आर्थिक विकास पैटर्न में चार मुख्य केंद्र हैं, जिनमें से सबसे पुराना 1870 के दशक का है। ये चार केंद्र, जो ज्यादातर निजी वाणिज्यिक गतिविधियों का परिणाम हैं, शहर के साथ-साथ विस्तारित हुए हैं। तीन समृद्ध स्थानीय व्यवसाय मालिकों का नेतृत्व यह पता लगाने के लिए किया गया था कि क्या निजी कार्य स्थानीय रूप से संचालित थे या बाहरी ताकतों से प्रभावित थे। उनकी गतिविधियों को उस हद तक स्वायत्त माना जा सकता है क्योंकि उनके कार्य इतिहास ने व्यवसाय विकास चरणों के दौरान संस्थागत या सरकारी समर्थन का कोई प्रमाण नहीं दिखाया। हालाँकि, उनकी स्वायत्तता इस हद तक कम हो गई है कि उनकी



अंतिम उत्पाद बिक्री बाहरी बाजारों और उत्पादन निवेश पर निर्भर थी। हालाँकि, शहरी पूर्णिया की अर्थव्यवस्था को आश्रित की तुलना में अधिक स्वतंत्र माना जा सकता है, क्योंकि बड़े महानगरीय शहरों में दूर के बाजारों के लिए वस्तुओं और सेवाओं के निर्माण में स्थानीय और आसपास की आर्थिक गतिविधियों का वर्चस्व बना हुआ है। हालाँकि, तेजी से जनसंख्या वृद्धि और स्वतंत्र आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप झुग्गियों का विकास हुआ है और पर्याप्त नागरिक सुविधाओं से वंचित एक तेजी से बढ़ता शहर है। शहर की लगभग एक तिहाई आबादी अब छितरे हुए झुग्गी-झोपड़ी समूहों में रहती है। निजी कंपनियां जो शहर और नागरिक समाज में फल-फूल रही हैं, वे भी मदद कर सकती हैं। एक शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय नागरिक और कल्याणकारी चिंताओं को संबोधित करने वाले नागरिक संगठनों के गठन के पीछे एक प्रेरक शक्ति के रूप में काम कर सकता है। अधिकांश भारतीय इस शताब्दी के मध्य तक महानगरीय क्षेत्रों में रहेंगे, काम करेंगे या रहेंगे। 2030 तक लगभग 50% शहरी निवासी एक मिलियन या उससे अधिक की आबादी वाले शहरों में रहेंगे। अन्य आधे लोग छोटे शहरों और कस्बों में रहेंगे, जैसे कि पूर्णिया, जिन्हें "गैर-मेट्रो" क्षेत्रों के रूप में जाना जाता है। नीति निर्माताओं को इस दूसरे हिस्से की अनदेखी करना बंद कर देना चाहिए। 2030 तक भारत की शहरी आबादी में लगभग दोगुनी वृद्धि को अवशोषित करने के लिए इन छोटी बस्तियों के लिए उचित योजना और सहायता आवश्यक हो सकती है।

निष्पादन:

उपर्युक्त शोध से यह स्पष्ट होता है कि व्यापारियों का समुदाय उत्तर-पूर्व बिहार के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण रहा है। उनके निरंतर प्रयासों और विवेक से सभी क्षेत्रों में रोजगारों का सृजन हुआ, धन का सृजन हुआ, आर्थिक संस्थानों का विकास हुआ और समुदायों का विकास हुआ। कटिहार को पहले मिनी कलकत्ता के नाम से जाना जाता था क्योंकि इसे बिहार में एक औद्योगिक शहर के रूप में वर्गीकृत किया गया था। कटिहार वर्तमान में पूर्वोत्तर बिहार के पूर्णिया और कोशी संभागों में सबसे बड़ा औद्योगिक और वाणिज्यिक केंद्र है। पूर्णिया, अरारिया, किशनगंज, माधेपुरा, सुपल और सहारसा जिले, भागलपुर जिले में नौगाचिया और पड़ोसी बांग्लादेश और नेपाल उन वाणिज्यिक और औद्योगिक जरूरतों में से हैं जिन्हें कटिहार पूरा करता है। हालाँकि, एक अधिक गहन जांच से पता चलता है कि व्यापारी समुदाय, जो औद्योगिक और व्यावसायिक केंद्रों को नियंत्रित करता है, के पास नियमित कर्मचारियों के वेतन और दैनिक भुगतान का भुगतान करने का स्पष्ट आधार है। यह भी पता चला है कि वे अपने श्रमिकों को हर दिन न्यूनतम मजदूरी से कम भुगतान कर रहे हैं। पूर्वोत्तर बिहार श्रम अधीक्षक के कार्यालयों में कई मामले लंबित हैं। इसके अतिरिक्त, यह ध्यान दिया गया है कि व्यापारी समुदाय के संगठनों और व्यवसायों में आम तौर पर मजदूरों और श्रमिकों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण विचारों की कमी है। कपड़ा पट्टियों और व्यापारी समुदाय द्वारा स्थापित परिवहन फर्मों में सामान ले जाना हजारों बिहारी कुलियों का आजीवन व्यवसाय था। बिहारी लोग कई व्यापारी समुदाय समूहों में विक्रेता के रूप में काम करते हैं, लेकिन जब वे शारीरिक रूप से अपना काम करने में असमर्थ होते हैं तो उन्हें किसी भी तरह से भुगतान नहीं किया जाता है। उनके पास कोई जीवन बीमा, पीएफ या ग्रेच्युटी सुविधा नहीं है। दुर्घटना की स्थिति में चिकित्सा बीमा या मुआवजे का पर्याप्त प्रावधान नहीं है। यह असंगठित श्रम क्षेत्र के शोषण का एक वास्तविक उदाहरण है। बिहारी समुदाय के कुछ सदस्यों के पास कुछ संगठनों में प्रबंधकों के रूप में प्रमुख पद हैं, जबकि अन्य व्यापारियों और व्यापारियों के साथ संबंध बनाते हैं। हालाँकि, बिहारी लोगों के पास साझेदारी में भी समान अधिकार और सम्मान नहीं हैं। कुछ बिहारियों को महत्वपूर्ण पदों पर रखने के बावजूद,



समुदाय के व्यापारी और व्यापारी अपनी कंपनियों पर पूर्ण अधिकार और नियंत्रण बनाए रखते हैं। बाहरी गड़बड़ी या सभा की स्थिति में सुरक्षा और सुरक्षा बिहारी व्यक्तियों को साझेदारी में या उनके उद्यमों के भीतर प्रमुख पदों पर बनाए रखने का प्राथमिक लक्ष्य है। इन स्थितियों में, बिहारी भागीदार समुदाय में व्यापारियों के लिए एक बफर के रूप में कार्य करता है।

यह तथ्य कि समुदाय के व्यापारी और व्यवसायी इनमें से अधिकांश संगठनों में नकद रजिस्टर चलाते हैं, यह दर्शाता है कि वे या तो अपने बिहारी भागीदारों पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करते हैं-उनमें से कुछ लंबे समय से बिहारी समुदाय के साथ रह रहे हैं-या वे हर कीमत पर अपनी कंपनी पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखना चाहते हैं। समुदाय में कुछ व्यापारियों और व्यापारियों के खिलाफ असामाजिक बिहारी तत्वों द्वारा की गई डकैती, बलात्कार और हत्याओं की व्यापकता जैसे और भी कारण हो सकते हैं। इस प्रकार, यदि व्यापारी समुदाय के सफल व्यवसायी अपने कर्मचारियों के प्रति कुछ सहानुभूति दिखाते हैं, सरकारी नियमों के अनुसार न्यूनतम मजदूरी निर्धारित करते हैं, अक्षम सेवानिवृत्त सेवा सदस्यों और कर्मचारियों के लिए पीएफ, ग्रेच्युटी, जीवन बीमा लागू करते हैं, और दुर्घटना की स्थिति में मेडिकलेम जैसे लाभ प्रदान करते हैं, तो उनकी व्यावसायिक सफलता में काफी वृद्धि होगी। इनसे न केवल बिहारी समुदाय और उससे जुड़े श्रमिकों का व्यापारी समुदाय में विश्वास बढ़ेगा, बल्कि वे निस्संदेह व्यापारी समुदाय से जुड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की संख्या को कम करने में भी मदद करेंगे।

References:

1. Sāhā NC. The Marwari Community in Eastern India: A Historical Survey Focussing North Bengal. Blue Heron Books; 2003.
2. Lakshmi Jay, Jha Pawan Kumar. North Eastern Bihar Chamber of Commerce & Industries and Marwari Community of Katihar. Time Journals of Social Sciences. 2014 January; 2(1): 1-4, www.timejournals.org/tjss.
3. Banglapedia. Marwaris. 2015; en.banglapedia.org.
4. Ajwani, Deepak (18th March 2014). "Indian Media : Traders community s Write the Script ! Forbes India." Forbes India. Retrieved 2017.11.25. Banglapedia (2015). Traders community s. en.banglapedia.org. Chamaria, Anil (2018). Interview 25th November 2018.
5. Chamaria, Sitaram (1998). Sarfaroshi ki tamanna tab sabon ke dilon me thi. Souvenir Katihar District Silver jubilee Ccelebration. Nutan Press, Katihar, pp. 26-27.
6. Chamaria, Sitaram (2010). Interview, 12th May 2010.
7. Lakshmi, Jay and Pawan Kumar Jha (2014a). North Eastern Bihar Chamber of Commerce & Industries and Traders community Community of Katihar. Time Journals of Social Sciences, Vol. 2 (1) : 1-4, January, www.timejournals.org/tjss.
8. Lakshmi, Jay and Pawan Kumar Jha (2014b). Traders community Samuday and Kshhetriya Vikas. Novelty and Company, Ashok Rajpath Patna, pp. 302.
9. Lakshmi, Jay and Pawan Kumar Jha (2019). Traders community community and their role in the political process of north-eastern Bihar during pre-independence period. International journal of Social Sciences and Research (IJSSR). IAHRW Publications Pvt. Ltd., Hisar, Haryana. January issue.
10. Pragati Path (2008). Souvenir. 35th Establishment Day of Katihar District, p. 87.
11. Saha, Narayan Chandra (2003). The Traders community Community in Eastern India (A Historical Survey Focusing North Bengal). Decent Books, New Delhi, pp. 328.
12. Taknet, D.K. (2009). Traders community vyavsayi sahas ke dhani. Vaish Sammelan, A Competent Monthly Magazine of Global Vaish Community, year : 20, vol. – 11, June : 2009, Aga Publications Ltd., Hyderabad, pp.32-41.
13. Taknet, D.K. (2016). Role of Traders community s in the freedom struggle. The Traders community Heritage, Pragati Offset Pvt. Ltd. Hyderabad, pp.132-185.
14. Timberg, Thomas A. (1979). The Traders community s from Traders to Industrialists. Vikash Publishing House Private Limited, pp. 268.